॥ श्री ॥

सुभाषितरत्नसंदोह

SUBHAASHITARATNASANDOHA

अमितगति · ११वीं शती · अभिलेख ५६/९०

श्री देवसेन सूरि → **अमितगति** → श्री गोपसेन

संक्षिप्त परिचय

आचार्य अमितगति कृत — नीति, वैराग्य और धर्म के संस्कृत सुभाषितों का रत्न-संग्रह।

— सम्पादकीय परिचय; नीचे की तालिका-सामग्री मूल स्रोतों से अक्षरशः है। · Editorial summary; all list data is verbatim from the sources.

अभिलेख-विवरण

सुभाषितरत्नसंदोह — दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के ९० प्रमुख प्राचीन ग्रन्थों की कालानुक्रमिक सूची में क्रमांक ५६ पर अंकित ग्रन्थ है। रचयिता अमितगति; रचना-काल ११वीं शती (लगभग)। आचार्य-समयानुक्रमणिका (क्रमांक १७८) के अनुसार इनका समय ९२३–९६३ है तथा गुरु श्री देवसेन सूरि। वहाँ इनकी विशेषता/प्रधान कृति के रूप में "षट्त्रिंशितिका योगसार प्राभृत, मरणकंडिका आदि" उल्लिखित है। इसी लेखनी से धर्मपरीक्षा, श्रावकाचार भी इस सूची में सम्मिलित हैं। समकालीन ग्रन्थों में वर्धमानचरित, पार्श्वनाथचरित, न्यायकुमुदचन्द्र, प्रमेयकमलमार्तण्ड, परीक्षामुख, परीक्षामुखवृत्ति परिगणित हैं।

इसी लेखनी से

धर्मपरीक्षा · श्रावकाचार

समकालीन ग्रन्थ

वर्धमानचरित · पार्श्वनाथचरित · न्यायकुमुदचन्द्र · प्रमेयकमलमार्तण्ड · परीक्षामुख · परीक्षामुखवृत्ति

सम्पूर्ण ग्रन्थ पढ़ें

जैन ग्रन्थ लाइब्रेरी ↗ · जैनकोश ↗ · Archive.org ↗

बाह्य ग्रन्थालयों में खोज — नई टैब में खुलेगी

प्रमाण: ९०-ग्रन्थ सूची-पोस्टर, पंक्ति ५६ — मूल छायाचित्र

← श्रावकाचार

वर्धमानचरित →